रात्रिक्लास 14/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

सात रोज में अगर ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ नहीं बनते हैं, तो बुद्धू कहेंगे। प्रजा में चले जावेंगे। वास्तव में सात दिन का कोर्स है। इसमें समझ कर समझाने लायक बन जाना है। मेरे ध्यान में सात रोज में एकदम तैयार हो जाना चाहिए। सात रोज यहाँ आकर अन्उ(द)र रहें, न पत्र व्यवहार न कोई से मिलें। क्वारन टाइन में रहना पड़े। सारा दिन यहाँ संग में। उनको सात रोज कहा जाता है। तो फिर जल्दी2 पास होकर निकल पड़ेंगे सर्विस पर। मूल बात एक बात समझ जायें तो आपे ही उठ जायें। बाप को याद करने से स्वर्ग की बादशाही मिलती है। दैवी गुण ज़रूर धारण करनी है। नब्ज़ देखने वाला बड़ा होशियार चाहिए। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह नॉलेज तो बुद्धि में ज़रूर होनी चाहिए। स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठना है। बच्चों को सर्विस में लग–लगा होना चाहिए। कोई राय हो बाबा यहां क्या2 होना चाहिए बता सकते हैं। घर के बच्चे हो ना। यह है टावर आफ सायलेन्स। मनुष्य शान्ति चाहते हैं ना। तुम बैठते ही ऐसे हो जैसे कि शरीर छोड़कर जाते हो। यह भी बुद्धि में रखना है टॉकी को छोड़ जावें मुवी में। सायलेन्स में जाना है। शान्ति बहुत रहनी चाहिए। आवाज़ न हो। शान्ति से रहने से कोई को भी आने से मज़ा आवेगा। यहाँ मरना सिखाया जाता है। हमको जाना है अपने घर। दुनिया गुल2 बन जावेगी। फिर हम आवेंगे। जो कोई भी आवे तुम बोलो, तुम बन्दर से देवता बनना चाहते हो? तो बनो। प्रबन्ध मकान आदि का करो। बोझा नहीं पड़ेगा। बाबा पास पैसे बहुत हैं। राजाई हम स्थापन करते हैं। तो पैसे भी हम खर्च करते हैं। मालिक भी हम बनेंगे। युक्ति से ईशारा भी देना पड़ता है। हम ब्राह्मण अपने लिए राई(राजाई) स्थापन कर रहे हैं। तो हम अपना ही खर्चा करेंगे। भिखारी थोड़े ही हैं, जो दूसरे का पैसा लगावेंगे। हम अपना ही लगाते हैं। यह योगबल की बात है। बाप कहते हैं, याद से तुम सतोप्रधान बन नई दुनिया में आ जावेंगे। हम अपने पैसे से अपनी राजधानी स्थापन करते हैं। हम(क)ो भीख मांगने का नहीं है। हम राजाई स्थापन करने लिए अपने गर्वमेन्ट से ही नहीं लेते हैं, तो बाहर वालों से कैसे लेंगे। इतने ढेर बच्चे बैठे हैं। जानते हैं यह सब खलास हो जाना है; इसलिए अपना लगाते रहते हैं। हम अपने पैसे लगा सकते हैं फिर साहूकार से लेवें ही क्यों। बाबा पास जमा करते हैं, बाबा भी मदद करते हैं। इनकम टैक्स आदि की तो बात ही नहीं। वन्डरफुल बात है ना। पढ़ाई से राजधानी मिलता(ी) है। पैसे की तो दरकार ही नहीं रहती। हम जानते हैं हम जो करेंगे हम पावेंगे। अपने लिए ही राजधानी स्थापन करते हैं। भीख लेने की बात ही नहीं। कोई में भी मोह न रखना है; क्योंकि जानते हैं यह सभी खत्म होनी है। मोह किसमें रखें? तुम सभी आत्माएँ पढ़ रहे(ी) हो। मोह की बात ही नहीं। रग तोड़नी है। हम आत्माओं को जाना है घर। यह पुराना शरीर छोड़ देना है। हम आत्माएँ चले(ी) जावेंगे(ी) फिर आवेंगे(ी) नहीं। मोह रखेंगे तो अंत काल जो.... सुना है कब गीत? बाबा की स्मृति में अंत काल जो मरेंगे तो स्वर्ग का मालिक बन जावेंगे। तुम अपना वकील आपे ही बनते हो, श्रीमत पर। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

डायरैक्शनः– सभी सेन्टर्स के स्टुडेन्ट्स को खास यह बात ध्यान में रखनी है कि आजकल पोस्टेज चार्ज बढ़ गये हैं; इसलिए पोस्ट–ऑफिस से पूछकर पोस्ट पर टिकेट पूरी लगावें। नहीं तो यहाँ पर डबल, ट्रिबल ड(द)न्ड भी भरना पड़ता है और पोस्ट भी दो/चार दिन लेट मिलती है।

(2) :– नांगल में वृजमोहन ने सेन्टर का मकान बदली किया है। जिसकी एड्रेस लिख रहे हैंः– फोन, नम्बरः–506

BRAHMA KUMARIS
11/4/4, SECTOR,
NAYA NANGAL (Pb).